

---

# Guhanama Skanda Sangraha

---

## गुहनामस्कान्दसङ्ग्रहः

---

### Document Information

Text title : Guha Nama Skandasamgrahah

File name : guhanAmaskAndasaMgrahaH.itx

Category : subrahmanya, nAmAvalI

Location : doc\_subrahmanya

Author : gaNapatisubrahmaNyasharmaNaH

Proofread by : Preeti Bhandare

Latest update : April 25, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

April 25, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

गुहनामस्कान्दसङ्ग्रहः



सर्वमङ्गलाजानिः शरणम् ।  
ॐनमः श्रीमते शरवणभवाय ।  
अथ गुहनामस्कान्दसङ्ग्रहः ।  
॥ मङ्गलम् ॥

ध्यायाम्यन्तर्नाथं शक्तिसनाथं मुखे वशानाथम् ।  
प्रमथानामधिनाथं विघ्नविमाथं कृतारिकुलमाथम् ॥ १ ॥

सुब्रह्मण्यं कलये सततं हृदयेऽखिलापदुद्धृतये ।  
निर्मलवाग्विस्तृतये बहुनिर्वृतयेऽखिलागमागतये ॥ २ ॥

अथ दक्षकाण्डम् ।  
ईश्वरसम्बोधनान्तः ।  
॥ कथासङ्ग्रहः ॥

शुद्धब्रह्मपरेश गुरो  
सिद्धवेषधृतिदक्ष गुरो  
सद्धर्माकृतिवाह गुरो  
विद्धसुरारिसनूह गुरो शुद्धब्रह्म ॥ १ ॥

ईशप्रसादङ्गतश्रीदक्षो गुरो  
कोशराज्यभारवाहः श्रीदक्षो गुरो  
ईश्वरीं तनयामाप्तुमतपत् गुरो  
भास्वरप्रबद्धाञ्जलिः श्रीदक्षो गुरो शुद्धब्रह्म ॥ २ ॥

वेदवल्लीजानिरासीत् श्रीदक्षो गुरो  
जातद्विसहस्रपुत्रः श्रीदक्षो गुरो  
द्योतिसप्तपुत्रीयुतः श्रीदक्षो गुरो  
मोदमापगौर्यापुत्र्याश्रीदक्षो गुरो शुद्धब्रह्म ॥ ३ ॥

कपालिन् कल्याणेमध्येन्तर्हितो गुरो  
 तपस्पन्स्याः पुरोविप्रवेष गुरो  
 अपरिमितरूपं साददर्श गुरो  
 कोपाविष्टोदक्षोपित्वान्निन्द गुरो शुद्धब्रह्म ॥ ४॥

जामातृसप्ततापसः श्रीदक्षो गुरो  
 जामातृभूतस्त्वमपिदक्षस्य गुरो  
 दातारं त्वामनाहूय यागवान् गुरो  
 मातादाक्षायणीकोपमापश्री गुरो शुद्धब्रह्म ॥ ५॥

शम्भो महिमादधीचिबोधितो गुरो  
 शम्भुविनानकुर्वितिप्राहस गुरो  
 अम्बातवनिकटं प्राप्तानिन्दिता गुरो  
 डिम्भवीरलुप्तदक्षयाग गुरो शुद्धब्रह्म ॥ ६॥

धावदिन्द्रदेवसैन्यपाल गुरो  
 देवमेषमुखदक्षप्रार्थित गुरो  
 पापहरस्तोत्रकारिदक्षप गुरो  
 शापनिवारणदक्षशुभद गुरो शुद्धब्रह्म ॥ ७॥

इति दक्षकाण्डः ॥

अथ सम्भवकाण्डम् ।  
 ईश्वरवर्णनम् ।  
 शुद्धसनकमुनिवन्द्य गुरो  
 रुद्धमदनमदभार गुरो  
 बद्धहस्तमुनिसेव्य गुरो  
 वृद्धवेषधरपूर्व गुरो देवदेव ॥ ८॥

देवदेव जगदीश गुरो  
 देवदेवशुभदायि गुरो  
 देवदेवचिदधीश गुरो  
 देवदेवमनुदायि गुरो देवदेव ॥ ९॥

सर्वज्ञसप्तऋषिप्रेषक भो  
 पर्वततनयोद्वाहक भो  
 गर्वहरमुनियाम्यप्रेषक भो

खर्वभिन्ननतिरतिरक्षक भो देवदेव ॥ १० ॥

अग्निमुखस्तुतविभववि भो  
भुम्भवदनाम्बुजगौर्यङ्क भो  
उद्विग्नागङ्गावाहितवीर्यवि भो  
अघघ्नशरवणजषट् सुतवि भो देवदेव ॥ ११ ॥

अथ सुब्रह्मण्यवर्णनम् ।  
षण्मुखविलसितसुन्दर गुहोम्  
चिन्मुखकृत्तिकास्त्रीपालित गुहोम्  
सन्मुखोमाकृतालोकोलिङ्गन गुहोम्  
सम्यक्सुपात्रपयःप्राशन गुहोम् देवदेवजयवल्लीश ॥ १२ ॥

देवदेवजयवल्लीश  
देवदेवजयसेनेश  
देवदेवशिवबालेश  
देवदेवगुहनामेश ॥ १३ ॥

शापगतमुनिजपाल गुहोम्  
पापहरशरवणेश गुहोम्  
तापत्रयहर देव गुहोम्  
कोपरहित शुभरूप गुहोम् देवदेवजय ॥ १४ ॥

बालमनोहरेतिगीत गुहोम्  
लालाजालयुतचक्रम गुहोम्  
डोलापदोद्धूननललित गुहोम्  
शीलोभयकुलदीप्रदीपक गुहोम् देवदेवजय ॥ १५ ॥

मन्दमन्दपदगमन गुहोम्  
इन्दुवदनकुन्दरदन गुहोम्  
मन्दस्मितकम्बुकन्धर गुहोम्  
गन्धशरीरेत्युमागीत गुहोम् देवदेवजय ॥ १६ ॥

कृतरौषमेषमदमोष गुहोम्  
नतवद्धमुक्तब्रह्मदेव गुहोम्  
द्रुतकृतप्रणवोपदेश गुहोम्  
हितकरशङ्करप्रसाद गुहोम् देवदेवजय ॥ १७ ॥

गर्भाष्टमउपनीत गुहोम्  
 दौर्भाग्यापहरविघ्नेश गुहोम्  
 निर्भरलीलाजालसंयुत गुहोम्  
 दर्भरशनावेष्टिताम्बर गुहोम् देवदेवजय ॥ १८ ॥

नारदबोधितवचन गुहोम्  
 तारकहरक्रौञ्चदलन गुहोम्  
 धीरक्रौञ्चबिलमोचक गुहोम्  
 वीरबाह्वादिस्तुतविभव गुहोम् देवदेवजय ॥ १९ ॥

हिमगिरिदेवगिरिचार गुहोम्  
 द्रुमयुतवृद्धगिरिचार गुहोम्  
 भ्रमहरवेङ्कटाद्रिचार गुहोम्  
 श्रमहरारुणाचलचार गुहोम् देवदेवजय ॥ २० ॥

केदारेशक्षेत्रादिगमन गुहोम्  
 ज्योतिर्मयकालहस्तिगमन गुहोम्  
 भूतिदायिविरूपाक्षगमन गुहोम्  
 भीतिहरवटारण्यगमन गुहोम् देवदेवजय ॥ २१ ॥

काशीविश्वनाथक्षेत्रगमन गुहोम्  
 भूषितवरश्रीशैलगमन गुहोम्  
 शोभितकाञ्चीनगरगमन गुहोम्  
 मोदितचिदम्बरेशगमन गुहोम् देवदेवजय ॥ २२ ॥

तुङ्गस्वर्णमुखीनदीसङ्गत गुहोम्  
 मङ्गलदमणिनदीसङ्गत गुहोम्  
 तुङ्गामलपेण्णानदीसङ्गत गुहोम्  
 सङ्गमकावेरीतीरसङ्गत गुहोम् देवदेवजय ॥ २३ ॥

मरुप्रदेशसञ्चारषण्मुख गुहोम्  
 सुरुचिरपराचलसङ्गत गुहोम्  
 निरुपममुनिपुत्रसङ्गत गुहोम्  
 वरुणालयाग्रसन्धिसङ्गत गुहोम् देवदेवजय ॥ २४ ॥

इति सम्भवकाण्डम् ॥

अथासुरकाण्डम् ।

वन्दितामराचार्यवेदित गुहोम्

चिन्तिसुरवृत्तान्तजन्य गुहोम्

अथ सुब्रह्मण्यं प्रति देवगुरुवचनम् ।

पण्डितकाश्यापोनामवर्तते गुहोम्

चण्डिकामायानामतं ययौ गुहोम् देवदेवजय ॥ २५ ॥

मायायाः प्रथमयामेशूरो गुहोम्

भूयोद्वितीयेजनिंसिंहास्यो गुहोम्

दायादस्तृतीययामेतारको गुहोम्

कायाढ्यातुरीययामेऽजामुखी गुहोम् देवदेवजय ॥ २६ ॥

आर्यशुक्रोपदिष्टशूरो गुहोम्

वीरयागमकृतशूरो गुहोम्

आर्यशिवप्रसादमाप गुहोम्

वीर्यपाशुपतास्त्रम्प्राप गुहोम् देवदेवजय ॥ २७ ॥

इन्द्रादिदिग्विजयं व्यधित गुहोम्

वन्द्यवैकुण्ठजयमकृत गुहोम्

नन्द्यकैलासङ्गतशूरो गुहोम्

सान्द्रवीरमहेन्द्राधारो गुहोम् देवदेवजय ॥ २८ ॥

शूरभीत्याविंशताभृदिन्द्रो गुहोम्

चार्वगस्त्यानीताभुविकावेरी गुहोम्

वीरक्रौञ्चशापकारीकुम्भजो गुहोम्

धीरकुम्भजजितोविन्ध्यो गुहोम् देवदेवजय ॥ २९ ॥

विजितेत्वलवातापिःकुम्भजो गुहोम्

विहितकुहालगतिः कुम्भजो गुहोम्

गलितेन्द्राणीरक्षकश्शास्ता गुहोम्

ज्वलितशास्तृत्तान्तवादीन्द्रो गुहोम् देवदेवजय ॥ ३० ॥

मोहिन्यङ्गगलितागण्डकीनदी गुहोम्

वेदवेद्यसालग्रामाजाता गुहोम्

मोहिताजामुखीखण्डितेन्द्राणी गुहोम्

नाशितकराकालेनाजामुखी गुहोम् देवदेवजय ॥ ३१ ॥

भानुकोपेनबद्धोजयन्तो गुहोम्  
तेनभिन्नदन्तोगजेन्द्रो गुहोम्  
ध्यायन्नापगजश्वेतारण्यं गुहोम्  
ज्ञानिगुरुणेत्थम्भक्त्यावेदित गुहोम् देवदेवजय ॥ ३२ ॥

इत्यासुरकाण्डम् ॥

अथ वीरमहेन्द्रकाण्डम् ।

गुहनामावलिः ।

चारभावगतवीरबाहो गुहोम्  
शूरबुद्धिवादिवीरबाहु गुहोम्  
वीरबाहुघातितसैन्य गुहोम्  
धीरसनीडगामिवीर गुहोम् देवदेवमय ॥ ३३ ॥

शूरपद्मसिंहवक्रणेडित गुहोम्  
तीरहेमकूटनगरावास गुहोम्  
अपारकरुणामृतमानस गुहोम्  
उदारभानुकोपदर्शक गुहोम् देवदेवजय ॥ ३४ ॥

इति वीरमहेन्द्रकाण्डम् ॥

अथ युद्धकाण्डम् ।

प्रेषितपाशुपतवीर गुहोम्  
भीषितगतभानुकोप गुहोम्  
ततश्च सम्बोधनान्तः

॥ कथा सङ्ग्रहः ॥

दूषितस्त्वयारणेशूरो गुहोम्  
दूषितंशूरतिरोधानं गुहोम् देवदेवजय ॥ ३५ ॥

भूयोप्यतिबाहुभानुकोपौ गुहोम्  
प्रायोहिसमानसैन्ययुद्धो गुहोम्  
भूयोपिसमुद्रक्षिप्तसैन्यं गुहोम्  
भूयोपिसुशक्त्याकृष्टंसैन्यं गुहोम् देवदेवजय ॥ ३६ ॥

॥ सुब्रह्मण्यस्तोत्रम् ॥

विदितहिरण्यमत्स्यभावद् गुहोम्  
 पातिताग्निमुखादिरिपुसुत गुहोम्  
 विहितविजययुद्धमुदित गुहोम्  
 जरितविकृतधर्मकोपादे गुहोम् देवदेवजय ॥ ३७ ॥

परिहतभानुकोपवीर गुहोम्  
 अथ कथा ।  
 सुरततिसागरेऽक्षिपत्सिंहो गुहोम्  
 सरलशक्त्याकर्षितादेवा गुहोम्  
 हननविरलोदरस्सिंहास्यो गुहोम् देवदेवजय ॥ ३८ ॥

माययाण्डाकृष्टसैन्यः शूरो गुहोम्  
 मायाबलसर्वाकारश्शूरो गुहोम्  
 मायासुरभिजीवितसैन्यो गुहोम्  
 भूयोप्यपहतं शूरसैन्यं गुहोम् देवदेवजय ॥ ३९ ॥

अथ स्तोत्रम् ।  
 विश्वरूपतुष्टशूरषण्मुख गुहोम्  
 विश्वाहृतज्ञानशूरषण्मुख गुहोम्  
 विश्वासशूरवधषण्मुख गुहोम्  
 विश्वम्भरासुनायकषण्मुख गुहोम् देवदेवजय ॥ ४० ॥

इति युद्धकाण्डम् ॥

अथ देवकाण्डम् ।  
 श्रीसन्धिनगरयातषण्मुख गुहोम्  
 श्रीपराचलेकुञ्जरीविवाह गुहोम्  
 श्रीपुरन्दरपट्टाभिषेक गुहोम्  
 श्रीवरगुहाद्रिगतदेव गुहोम् देवदेवमय ॥ ४१ ॥

नारदेनवल्युद्धाहकरण गुहोम्  
 तारपरिपूर्णगिरिवास गुहोम्  
 दारद्वयाश्लिष्टदिव्यदेह गुहोम्  
 नारदादिस्तुत्यस्कन्दशैल गुहोम् देवदेवजय ॥ ४२ ॥

गुहनामस्कान्दपाठिभक्तस्य गुहोम्  
 इहपराभीष्टसिद्धिन्देहिभो गुहोम्



बृहन्मेहापस्मारादिहरणम् गुहोम्  
महदैश्वर्यप्रमावं षण्मुख गुहोम् देवदेवजय ॥ ४३ ॥

स्कान्दप्रोक्तशिखिनगेश गुहोम्  
शान्तसुमुखशिखिनगेश गुहोम्  
स्वान्तर्भुवनशिखिनगेश गुहोम्  
नान्तमध्यादेशिखिनगेश गुहोम् देवदेवजय ॥ ४४ ॥

शरवणभवशिखिनगेश गुहोम्  
रणपराक्रमशिखिनगेश गुहोम्  
वनवल्लीप्रियशिखिनगेश गुहोम्  
भवभयहरशिखिनगेश गुहोम् देवदेवजय ॥ ४५ ॥


सर्वलोकपालशिखिनगेश गुहोम्  
सर्वाङ्गसुन्दरशिखिनगेश गुहोम्  
सर्वदेवात्मकशिखिनगेश गुहोम्  
सर्वमङ्गलदशिखिनगेश गुहोम् देवदेवजय ॥ ४६ ॥


इति श्रीमयूरगिरिवास्तव्य  
सुब्बय्यार्यस्य गणपतिसुब्रह्मण्यशर्मणः कृतिषु  
स्कान्दसङ्ग्रहगुहनामावलिस्सम्पूर्णा ॥

सर्वमङ्गलाजानिः शरणम् ॥

Encoded and proofread by Preeti Bhandare

---

——  
*Guhanama Skanda Sangraha*  
pdf was typeset on April 25, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

